संपादक परिचय

डॉ. हेमा राम धुंधवाल का जन्म नागौर जिले के नया गाँव (अलाय) में हुआ था। इन्होंने अपनी बारहवीं तक की पढ़ाई गाँव की स्कूल में करने के पश्चात् राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात् पीएच.डी. की उपाधि भी राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से प्राप्त की। वर्तमान में आप श्री बी. आर. मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर (राजस्थान) में भूगोल विभाग में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। आपने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की अनेक संगोष्ठियों में भाग लिया और शोध पत्रों को प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया। आपके अनेक शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं एवं ग्रन्थों में प्रकाशित हो चुके हैं। आप "The National Association of Geographers India" और "Rajasthan Geographical Association" के आजीवन सदस्य हैं। आप समय–समय पर अनेक विद्यार्थियों का मार्गदर्शन एवं सहयोग करते रहते हैं।

Published Books–

1. पर्यावरण : अवधारणा, चुनौतियाँ और संरक्षण
2. भौतिक भूगोल (Physical Geography)
3. समकालीन भारतीय परिदृश्य : मुद्दे एवं चुनौतियाँ
4. Contemporary India: Issues and Challenges
5. समकालीन भारत में पर्यावरणीय मुद्दे एवं चुनौतियाँ
6. समकालीन भारतीय समाज : मुद्दे एवं चुनौतियाँ
7. Emerging Global Issues and Challenges
8. Regional Issues and Challenges

सह-संपादक परिचय

डॉ. मंजु नावरिया ने स्नातकोत्तर व पीएच.डी. की उपाधि राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से प्राप्त की है। वर्तमान में राजस्थान के स्व. पण्डित नवल किशोर शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा (राज.) में समाजशास्त्र विभाग में सह- आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। आपके द्वारा अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पत्र वाचन किये गये। आपके अनेकों लेख विभिन्न राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। आपकी अध्ययन–अध्यापन में विशेष रूचि के कारण यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत दो लघु शोध प्रबन्ध किये गये जो मीडिया, युवा, ग्रामीण क्षेत्र एवं वृद्धजनों के अध्ययन से सम्बन्धित रहे हैं। प्रकाशित पुस्तक – जन संचार माध्यम एवं युवा संस्कृति

सह-संपादक परिचय

डॉ. प्रेमलता कश्यप एक चित्रकार एवं प्रतिष्ठित गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद के चित्रकला विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर 2003 से कार्यरत हैं। आपने वर्ष 2005 में चित्रकला विषय में विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। अब तक आपके 25 से अधिक शोध पत्र हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आप राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कार्यशालाओं एवं सेमिनारों में भाग ले चुकी हैं। आप राष्ट्रीय सेवा योजना में कार्यक्रम अधिकारी एवं यूनिसेफ इनीशिएटिव द्वारा नियुक्त मेंटल हेल्थ काउंसलर के रूप में कार्य कर रही हैं। आपको कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन फैमिली काउंसलिंग में अपनी परामर्श सेवाओं से हजारों महिलाएं को लाभान्वित करने हेतु महिला एवं बाल सुरक्षा संगठन, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है साथ ही आप समाज सेवाओं से भी जुड़ी हुई है।

Shriyanshi Prakashan
8 Gandhi Nagar,Agra-282003 (U.P)
Mob-09761628581
email-infoshriyanshiprakashan@gmail.com,
Branch office
31A/119,Mata Mandir
Gali No.2 Maujpur,Delhi-53,India
email-shriyanshiprakashan@gmail.com

Price Rs-850.00
ISBN 978-9381247-58-7

Contemporary World : Issues and Challenges
डॉ. मंजु नावरिया, डॉ.प्रेमलता कश्यप

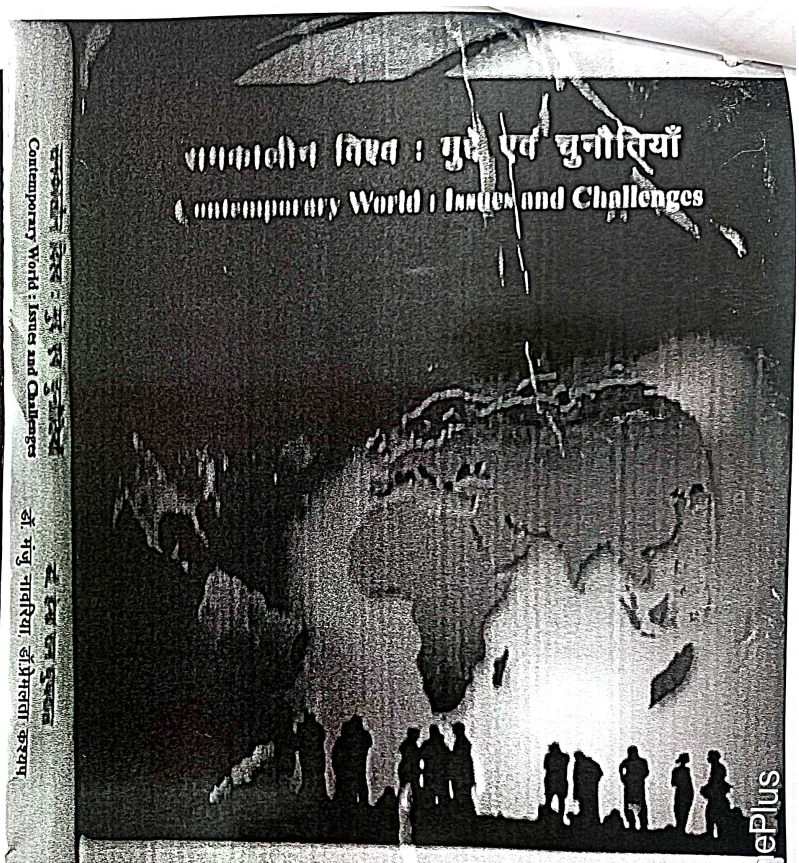

समकालीन विश्व : मुद्दे एवं चुनौतियाँ
Contemporary World : Issues and Challenges

सह-संपादिका
डॉ. मंजु नावरिया
डॉ. प्रेमलता कश्यप

संपादक
डॉ. हेमा राम धुंधवाल

समकालीन विश्व : मुद्दे एवं चुनौतियाँ

(Contemporary World : Issues and Challenges)

संपादक

डॉ. हेमा राम धुंधवाल

सहायक आचार्य (भूगोल),

श्री. बी. आर. मिर्धा राजकीय महाविद्यालय,

नागौर (राजस्थान)

सह–संपादक

मंजु नावरिया

सह–आचार्य (समाजशास्त्र)

स्व. पं. न. कि. शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

दौसा (राजस्थान)

सह–संपादक

डॉ. प्रेमलता कश्यप

सहायक आचार्य (चित्रकला)

गोकुलदास हिंन्दू गर्ल्स कॉलेज,

मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशक

श्रियांशी प्रकाशन

आगरा

on OnePlus

by Triple Camera

प्रकाशक
श्रियांशी प्रकाशन
8, गाँधी नगर, आगरा-282003
मो : 9761628581

समकालीन विश्व : मुद्दे एवं चुनौतियाँ

© संपादक

संस्करण 2022

ISBN 978-9381247-58-7

भारत में मुद्रित, आलोक श्रीवास्तव द्वारा श्रियांशी प्रकाशन, आगरा से प्रकाशित एवं डॉ. हेमा राम घुंघवाल सहायक आचार्य (भूगोल), श्री. बी. आर. मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर (राजस्थान) द्वारा सम्पादित

मुद्रक : जगदीश प्रिन्टर्स, दिल्ली

लेजर टाइसेटिंग : आनन्द कम्प्यूटर्स, आगरा-10

वैधानिक चेतावनी

- इस पुस्तक का प्रकाशन प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी प्रकार के धनार्जन के लिए उपयोग करना कानून का उल्लंघन तथा कॉपीराइट अधिनियम के अनुसार दण्डनीय अपराध माना जायेगा।
- इस पुस्तक का प्रकाशन बेहद सावधानीपूर्वक किया गया है फिर भी इस पुस्तक में कोई त्रुटि रहती है तो इसके लिए प्रकाशक,सम्पादक और लेखक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी प्रकार के परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र आगरा ही मान्य होगा।

on OnePlus
d by Triple Camera

(Contemporary World : Issues and Challenges)

योगदान सूची

1. **वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में विश्व बैंक और भारत**
– सरिता सिंह, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र), एम.एस.जे. राजकीय महाविद्यालय, भरतपुर (राजस्थान)

2. **वर्तमान वैश्विक परिदृश्य मे सनातनी जिजीविषा की उपादेयता**
– विनीता राजपुरोहित, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र विभाग), सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

3. **विश्व स्वास्थ्य संगठन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन**
– डॉ .लीला बामनिया (डावर), सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), शासकीय विक्रम महाविद्यालय खाचरोद, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

4. **अफगानिस्तान में पुनः तालिबान तथा मध्य एशिया में उसका प्रभाव**
– डॉ. सुरेन्द्र सिंह, सह–आचार्य (राजनीति विज्ञान), राजकीय महाविद्यालय, कोटपूतली, जयपुर (राजस्थान)

5. **धर्म और राजनीति**
–चेनाराम (महला), सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), राजकीय बाँगड़ महाविद्यालय, डीडवाना, नागौर (राजस्थान)

6. **दक्षिणी एशिया में चीन का बढ़ता प्रभाव**
– शेर सिंह मीना, UGC-NET (भूगोल), अलवर (राजस्थान)

7. **शीत युद्ध की समाप्ति और कश्मीर में आतंकवाद – अंतर्सम्बन्ध**
– मिथिलेश (शोधार्थी), हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

8. **आतंक से संघर्ष (भारत के राज्यों की स्थिति का अध्ययन)**
– डॉ. रजनी तसीवाल, सह–आचार्य (राजनीति विज्ञान), राजकीय महाविद्यालय, टोंक (राजस्थान)

9. **अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद** – डॉ. राकेश सिह, सैन्य विज्ञान विभाग, लक्ष्मण सिंह गहर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)

10. आपदा प्रबंधन : सैद्धांतिक एवं परिचयात्मक विवेचन
– डॉ. जितेन्द्र देव ढ़ाका, सहायक आचार्य, (अंग्रेजी), राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर (राजस्थान)

11. बाल अपराध : कारण एवं रोकथाम
– डॉ. ज्योति सचान, सहायक आचार्य (गृह–विज्ञान), से. मुं. मा. राजकीय कन्या महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राजस्थान)

12. साइबर अपराध व ठगी
– अंजू कुमारी (शोधार्थी), दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, धारवाड़ (कर्नाटक)

13. आर्थिक मंदी
– अशोक कुमार जांगिड़, सहायक–आचार्य, श्री बी. आर. मिर्धा राजकीय महाविद्यालय, नागौर (राजस्थान)

14. भारत में ई–कॉमर्स
– भावना हिंगड़, सहायक आचार्य (लेखा एवं व्यावसायिक सांख्यिकी), राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

15. भारतीय कृषि क्षेत्रः समस्याएं और उपाय
– डॉ. देवराज चौरे, सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), शासकीय महाविद्यालय, लांजी, जिला – बालाघाट (मध्य प्रदेश)

16. किसान एवं कृषिगत समस्याएं
– धर्मेन्द्र कुमार पाटनवार, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय इन्द्रावती महाविद्यालय, भोपालपटनम, जिला – बीजापुर (छतीसगढ़)

17. ग्लोबल वार्मिंग
– डॉ. रामकुमार गौतम, सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान विभाग), जयवंती हॉक्सर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैतूल (मध्य प्रदेश)

18. कोविड–19 – पर्यटन उद्योग की दशा और दिशा
– प्रेमराज चौधरी, सहायक आचार्य (इतिहास), श्री गोविद सिंह गुर्जर राजकीय महाविद्यालय, नसीराबाद, अजमेर (राजस्थान)

19. सूचना प्रौद्योगिकी वरदान या अभिशाप
– रमाकान्त सिंह, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय कुसुम महाविद्यालय, सिवनी मालवा, जिला – होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

20. मारवाड़ में नगरीकरण के उद्‌भव एवं विकास का ऐतिहासिक अध्ययन
– डॉ. भगवान सिंह शेखावत, सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

21. जलवायु परिवर्तन : एक गंभीर समस्या
– डॉ. वेदप्रकाश, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष भूगोल, किसान (पी. जी.) कॉलेज, सिम्भावली, जनपद हापुड़ (उत्तर प्रदेश)

22. समकालीन परिप्रेक्ष्य में महिला शोषण एवं घरेलू हिंसा
– डॉ. दर्शन सिंह किरार, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), महाराणा प्रताप शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाडरवारा, नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश)

23. महिला शोषण एवं घरेलू हिंसा के कारण
– कुलविन्दर कौर, शोधार्थी (चित्रकला), बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश)

24. दलित समाज और मानवाधिकार
– डॉ. मंजुलता चौधरी, सह–प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय महाविद्यालय, आलोट (मध्य प्रदेश)

25. कोविड–19 महामारी का महिलाओं पर प्रभाव
– डॉ. प्रियंका वर्मा, सहायक आचार्य (चित्रकला), राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा (राजस्थान)

26. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका
– डॉ. व्यास कुमार, सहायक प्राध्यापक (इतिहास), के. बी. कॉलेज बेरमों, बोकारो, (झारखण्ड़)

27. महिला सशक्तिकरण के परिदृश्य में भारत में महिला अधिकारों का संरक्षण
– डॉ. उम्मेद सिंह, सहायक आचार्य, राजकीय विधि महाविद्यालय, नागौर (राजस्थान)

28. भारत में महिला शोषण एवं घरेलू हिंसा
– रामदरश सिंह यादव, असिस्टेण्ट प्रोफेसर (समाजशास्त्र), बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

29. उपन्यास 'ऐ लड़की' में भारतीय स्त्री की आधुनिक स्थिति
– इरफान खान, (हिंदी विभाग), मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद (तेलंगाना)

30 तुलसी साहित्य और राजनीति
– डॉ. ऑचल मीणा, सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

on OnePlus

31. पड़ौसी देशों के प्रति भारतीय विदेश नीति की विवेचना
– डॉ. अशोक कुमार मीणा, सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान), आर.एल. सहरिया राजकीय महाविद्यालय, कालाडेरा, जयपुर (राजस्थान)

समकालीन विश्व : मुद्दे एवं चुनौतियाँ

(Contemporary World : Issues and Challenges)

विषय-सूची

1- वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में विश्व बैंक और भारत
– सरिता सिंह 01-08

2. वर्तमान वैश्विक परिदृश्य मे सनातनी जिजीविषा की उपादेयता
– विनीता राजपुरोहित 09-14

3. विश्व स्वास्थ्य संगठन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
– डॉ. लीला बामनिया (डावर) 15-20

4. अफगानिस्तान में पुनः तालिबान तथा मध्य एशिया में उसका प्रभाव
– डॉ. सुरेन्द्र सिंह 21-26

5. धर्म और राजनीति
– चेनाराम (महला) 27-32

6. दक्षिणी एशिया में चीन का बढ़ता प्रभाव
– शेर सिंह मीना 33-40

7. शीत युद्ध की समाप्ति और कश्मीर में आतंकवाद – अंतर्सम्बन्ध
– मिथिलेश (शोधार्थी 41-46

8. आतंक से संघर्ष (भारत के राज्यों की स्थिति का अध्ययन)
– डॉ. रजनी तसीवाल 47-58

9. अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद
– डॉ. राकेश सिह 59-68

10. आपदा प्रबंधन : सैद्धांतिक एवं परिचयात्मक विवेचन
– डॉ. जितेन्द्र देव ढ़ाका 69-78

Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

11. बाल अपराध : कारण एवं रोकथाम
– डॉ. ज्योति सचान 79-88

12. साइबर अपराध व ठगी
– अंजू कुमारी 89-94

13. आर्थिक मंदी
– अशोक कुमार जांगिड़ 95-106

14. भारत में ई–कॉमर्स
– भावना हिंगड़ 107-112

15. भारतीय कृषि क्षेत्र: समस्याएं और उपाय
– डॉ. देवराज चौरे 113-122

16. किसान एवं कृषिगत समस्याएं
– धर्मेन्द्र कुमार पाटनवार 123-128

17. ग्लोबल वार्मिंग
– डॉ. रामकुमार गौतम 129-134

18. कोविड–19 – पर्यटन उद्योग की दशा और दिशा
– प्रेमराज चौधरी 135-140

19. सूचना प्रौद्योगिकी वरदान या अभिशाप
– रमाकान्त सिंह 141-146

20. मारवाड़ में नगरीकरण के उद्भव एवं विकास का ऐतिहासिक अध्ययन
– डॉ. भगवान सिंह शेखावत 147-156

21. जलवायु परिवर्तन : एक गंभीर समस्या
– डॉ. वेदप्रकाश 157-164

22. समकालीन परिप्रेक्ष्य में महिला शोषण एवं घरेलू हिंसा
– डॉ. दर्शन सिंह किरार 165-172

23. महिला शोषण एवं घरेलू हिंसा के कारण
– कुलविन्दर कौर 173-178

24. दलित समाज और मानवाधिकार
– डॉ. मंजुलता चौधरी 179-184

25. कोविड–19 महामारी का महिलाओं पर प्रभाव
– डॉ. प्रियंका वर्मा 185-192

26. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका
– डॉ. व्यास कुमार 193-198

27. महिला सशक्तिकरण के परिदृश्य में भारत में महिला अधिकारों का संरक्षण
– डॉ. उम्मेद सिंह 199-206

28. भारत में महिला शोषण एवं घरेलू हिंसा
– रामदरश सिंह यादव 207-218

29. उपन्यास 'ऐ लड़की' में भारतीय स्त्री की आधुनिक स्थिति
– इरफान खान 219-224

30. तुलसी साहित्य और राजनीति
– डॉ. ऑचल मीणा 225-232

31. पड़ौसी देशों के प्रति भारतीय विदेश नीति की विवेचना
– डॉ. अशोक कुमार मीणा 233-240

Shot on OnePlus
Powered by Triple Camera

समकालीन विश्व : मुद्दे एवं चुनौतियाँ,
संपादक – डॉ. हेमा राम धुंधवाल
प्रकाशक – श्रियांशी प्रकाशन, आगरा,
ISBN 978-9381247-58-7 संस्करण –2022

7

शीत युद्ध की समाप्ति और कश्मीर में आतंकवाद – अंतर्सम्बन्ध

मिथिलेश (शोधार्थी)
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय,
दुर्ग (छतीसगढ़)

परिचय –

1989 में पूर्व सेवियत संघ की समाप्ति के साथ लगभग 45 वर्षो तक चले शीत युद्ध का अवसान हो गया। द्वितीय महायुद्ध के बाद प्रारंभ हुए इस शक्ति द्वन्द्व में प्रत्येक दशक में वृद्धि होती गयी और समस्त विश्व आणविक युद्ध के भय से पांच दशकों तक आंतरिक था। आधुनिक से आधुनिक हथियारों को विकसित करने में ही अमेरिका और सोवियत संघ की ऊर्जा खर्च होती रही। अपने अपने प्रभाव क्षेत्रों के विस्तार में दोनों महाशक्तियों ने संपूर्ण विश्व की किलेबंदी करवा दी।

परिणामत: 1989 में संपूर्ण विश्व में अमेरिका के दर्जनों सशस्त्र सैनिक अड्डे थे। जबकि सोवियत संघ के भी दर्जनों सैनिक अड्डे थे। दोनों के पास 1500 से अधिक आणविक शस्त्र थे। जिनसे अनेकों बार पृथ्वी की कुल जनसंख्या का सहार हो सकता है।

मुख्य शब्द – शीतयुद्ध, कश्मीर, आतंकवाद, सोवियत संघ, युद्ध, शस्त्र संघर्ष।

पंजाब में आतंकवाद की समाप्ति के बाद पाकिस्तान ने कश्मीर पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। पूर्व आई.एस.आई डाइरेक्टर जावेद नासिर के अनुसार पाकिस्तान में कश्मीरी आतंकवादियों को प्रशिक्षित करने के लिए कई कैम्प चल रहे हैं। 1963 में जावेद नासिर सहित लगभग 40 सैनिक अधिकारियों का तबादला केवल इसलिए कर दिया गया क्योंकि वो कश्मीर में आतंकवादियों के मामले में आई.एस.आई की गतिविधियों को कम

करना चाहते थे।[2] कश्मीर आज विश्व का सर्वाधिक सैन्यीकृत इलाका है जहां चार लाख से अधिक भारतीय सेना विद्यमान है।[3] इस प्रकार आतंकवाद से निबटने में भारत को भारी राशि खर्च करनी पड़ रही है। केवल कश्मीर में करोड़ों रू. प्रतिदिन का खर्च सेना पर आ रहा है। इसके साथ आज अलगाववादियों के अलावा भारत के हर छोटे–बड़े अपराधिक संगठनों के पास एके–47 जैसे हल्के एवं घातक शस्त्र मौजूद है जो पाकिस्तान अफगान पाइप लाइन से आते हैं।[4]

विचारणीय प्रश्न यह है कि आई.एस.आई. द्वारा भारतीय आतंक संगठनों को हल्के शस्त्रों की सप्लाई से पाकिस्तान सैन्य सहायता का प्रश्न कैसे जुड़ा है ? वस्तुतः यदि हम भारतीय आतंकवादियों के द्वारा प्रयुक्त किये जा रहे शस्त्रों विशेषतः कश्मीरी आतंकवादियों द्वारा प्रयुक्त किए जाने वाले शस्त्रों और सोवियत घुसपैठ के समय अफगान मुजाहिदोनों द्वारा प्रयुक्त किये जा रहे शस्त्रों पर निगाह डालें तो हमें इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। 1980 के दशक में अफगानिस्तान को अमेरिका पाकिस्तान के माध्यम से शस्त्र उपलब्ध कराता था। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय अनेक कारणों से अमेरिकी प्रशासन ने यह तय किया था कि अफगानिस्तान में सोवियत संघ से उसी साम्यवादी गुरिल्ला युद्ध पद्धति से निबटा जायेगा। जिसका कटु अनुभव अमेरिका को वियतनाम में हो चुका था। इसके अलावा प्रत्यक्ष युद्ध के न मात्र गंभीर अंतर्राष्ट्रीय परिणाम होते बल्कि यह बहुत महंगा भी पड़ता। वियतनाम युद्ध का खर्च 61000 मिलियन डालर था।[5] अतः अमेरिका ने अपेक्षातया सस्ता और अधिक लंबा चलने वाला गुरिल्ला युद्ध का रास्ता चुना। छापामारा युद्ध में स्पष्ट रूप से भारी युद्ध प्रणालियों की उपयोगिता नहीं थी। इसके अतिरिक्त अफगानिस्तान की पठारी परिस्थितियां हल्के शस्त्रों के लिए अधिक उपयुक्त थी। अतः अमेरिकी प्रशासन ने यह निर्णय लिया कि हल्की असाल्ट राइफलें, एवं अन्य हल्के उपकरण अफगान मुजाहिदीनों को हस्तांतरित किए जाये। इसके लिए पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई को माध्यम बनाया गया। निश्चित रूप से पाकिस्तान उन शास्त्रों को शत प्रतिशत हस्तांतरित नहीं करता था बल्कि इसकी एक बड़ी मात्रा पाकिस्तान में ही रोक ली जाती थी। जो इस समय कश्मीर और अन्य स्थानों पर आतंकवादियों के काम आ रही है। पेंटागन ने रूसी माडल की एके–47 और एके–56 एसाल्ट राइफलों को इनकी अत्यधिक प्रभावशीलता के कारण चुना।[6] अफगान मुजाहिदीनों को इन असाल्ट राइफलों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सी.आई.ए. (अमेरिकी गुप्तचर संस्था) ने चीन, मिस्र और तुर्की से बड़ी मात्रा में इनकी खरीद की।[7] सितम्बर 1981 में अमेरिकी टेलीविजन एनबीसी को दिए गए अपने साक्षात्कार में मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात ने इस प्रकार की राइफलें बड़ी मात्रा में देने पर सहमति जातायी।[8] उल्लेखनीय है कि मिस्र 1973 से पहले एक मजबूत एक सोवियत सहयोगी था। तथा सोवियत संघ मिस्र का मुख्य शस्त्र आपूर्ति कर्ता था। तुर्की और इसराइल से लगभग 6 लाख असाल्ट राइफलें, 8000 लाइट मशीन गन, मोर्टार, और दूसरे हल्के सैन्य उपकरण

खरीदे गए।[9] इन शस्त्रों के साथ लगभग 2000 मिलियन से अधिक के हल्के सैन्य उपकरण अमेरिका ने पाकिस्तान के माध्यम से अफगान मुजाहिदीनों को हस्तांतरित किये जिनमें प्रमुख थे।

1. रूसी माडल के सतह से हवा में मार करने वाले 8 एस ए एफ 7 मिसाइलें।
2. एफआईएम–92 स्टिंगर मिसाइलें।
3. हल्की मशीन गनें।
4. बारूदी सुरंगे।
5. अत्यंत घातक टाइम बम्स
6. राकेट लांचर
7. अमेरिकी अत्याधुनिक स्टिंगर मिसाइलें।[10]

उल्लेखनीय है कि अमेरिकी माडल की उपर्युक्त मिसाइलें केवल नाटो सदस्यों के पास थी। अतः सी.आई.ए. ने इन मिसाइलों को अफगान मुजाहिदीनों को दिए जाने पर कड़ा विरोध जताया था। क्योंकि इन मिसाइलों के चीन पहुंच जाने की आशंका थी। अधिकारिक के रूप में अमेरिकी कांग्रेस ने स्टिंगर मिसाइलों को अफगान मुजाहिदीनों को दिए जाने पर 1985 में जाकर सहमति दी। 1985 में लगभग 1000 स्टिंगर मिसाइलें पाकिस्तान के माध्यम से अफगानिस्तान पहुंचायी गयी। इस मिसाइलों से लगभग 2000 यार्ड की दूरी से ही पैटल टैंको एवं युद्धक हेलिकाप्टरों सहित सभी निशानों पर सटीक मार किया जा सकता हैं।

अफगान मुजाहिदीनों को अमेरिकी शस्त्र पहुंचाने का जिम्मा पाकिस्तान खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. का था, जो कि एक पूर्णतः सैनिक संस्था है। अमेरिका प्रशासन द्वारा इन शस्त्रों के पाकिस्तान पहुंचा दिये जाने पर ये पूर्णतः आई.एस.आई के नियंत्रण में आ जाते थे तथा अफगानिस्तान सीमा के निकट ओझिरी जैसे अनेक आयुधगारों में रख दिया जाता था। यह आई.एस.आई. ही थी जो यह तय करती थी कि किस अफगान गुट को कौन से शस्त्र और कितनी मात्रा में प्राप्त होगें।[12] और निश्चित रूप से वह उन अफगान विद्रोहियों को अधिक शस्त्र देती थी जो पाकिस्तानी सेना से अधिक अनुकूलता रखते थे।[13] अफगान मुजाहिदीनों को सौंपे जाने वाले अथियारों का कोई अधिकारिक रिकार्ड या एकाउण्ट पाकिस्तानी सैनिक सरकार नहीं रखती थी।[14] पाकिस्तानी बंदरगाहों पर जब ये शस्त्र उतारे जाते थे तब पाकिस्तानी सेना इनकी हैण्डलिंग या रख–रखाव कार्य करती थी पाकिस्तानी कस्टम विभाग नहीं।[15] इस प्रकार इस बात का कोई निश्चित एकाउण्ट पाकिस्तानी सेना नहीं रखती थी कि अमेरिका से कितने शस्त्र पाकिस्तान पहुंचे और कितने अफगान विद्रोहियों को हस्तांतरित किये गये।

इसका सीधा अर्थ है कि पाकिस्तानी सेना ने अफगान विद्रोहियों को पहुँचाए जाने वाले शस्त्रों में से बड़ी मात्रा में शस्त्र चोरी कर लेती थी।

1980–89 तक कुल कितने शस्त्र अमेरिका ने अफगान विद्रोहियों हेतु जारी किए यह अज्ञात है। लेकिन इसका भी अनुमान लगाना मुश्किल है कि इनमें से कितने हथियार पाकिस्तान सेना ने चोरी किये। फिर भी विभिन्न स्रोतो के औसत के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कुल अमेरिकी सप्लाई का 30 प्रतिशत पाकिस्तानी सेना द्वारा अपने पास रोक लिया जाता था। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार 1989 के मध्य तक 600000 से अधिक क्लाशनिकोव राइफलें अमेरिकी द्वारा अफगानिस्तान भेजी जा चुकी थी। जिनका बड़ा हिस्सा पाकिस्तान सेना ने हडप लिया। एक अमेरिकी पत्रकार एड गारसेन को एक पूर्वत आई.एस.आई. प्रमुख ने 1993 मेंयह बताया की आई.एस.आई. के पास 30 लाख से अधिक क्लासनिकोव राइफले मौजूद है जो अफगान आपूर्ति लाइन से उड़ाई गयी है।

एक पाकिस्तानी विद्वान आयेशा आगा सिद्दिकी ने आई.एस.आई. द्वारा अफगान आपूर्ति लाइन से शस्त्र चोरी के बारे में लिखा है कि अफगानिस्तान आपूर्ति लाइन से सर्वाधिक महत्वपूर्ण शस्त्र प्राप्ति थी अमेरिकी स्टिंगर मिसाइलें 1985 से 1987 के बीच पाकिस्तानी सेना ने 250 के लगभग स्ट्रिगर मिसाइलें प्राप्त की। (अफगान आपूर्ति लाइन से) अमेरिकी कांग्रेस में भी इस संबंध में आवाजें उठी। अनेक सदस्यों ने पाकिस्तान पर यह आरोप लगाया कि भारी शस्त्र सहायता देने के बावजूद पाकिस्तान, अफगानिस्तान पहुंचाने के लिए शस्त्र का केवल एक तिहाई ही आपूर्ति करता है। कांग्रेस ने इस बात की जॉच के लिए की क्या वास्तव में पाकिस्तानी सेना द्वारा दो तिहाई शस्त्र रख लिए जाते है ? एक टीम भेजने का निर्णय किये। जब यह टीम पाकिस्तान का दौरा करने वाली थी उसके ठीक पहले 1988 में से सबसे बड़े आयुध भण्डार ओझिरी (रावलपिण्डी) में आग लग गयी जिसमें सौ से अधिक लोग मारे गये।

इस प्रकार इस बात के अनेकों प्रमाण है जिससे यह साबित होता है कि अफगान विद्रोहियों को भेजे गये अमेरिकी शस्त्रों का आधे से अधिक हिस्सा पाकिस्तानी सेना द्वारा रोक लिया जाता था। इन्हीं हल्के शस्त्रों को पाकिस्तान ने पहले पंजाब में आतंकवादियों को दिया और अब कश्मीरी आतंकवादियों को दे रहा है। तथा अमेरिकी शस्त्रों से अपेक्षातया सस्ता (या लगभग मुफ्त क्योंकि ये शस्त्र भी चोरी के है।) युद्ध भारत से लड़ रहा है जो अपेक्षातया अधिक घातक एवं अधिक प्रभावी है। क्योकि पिछले दस वर्षो से चार लाख से अधिक भारतीय सेना को पाकिस्तान ने कश्मीर में उलझा रखा है। जबकि प्रत्यक्ष युद्ध में पाकिस्तान दो सप्ताह से अधिक लम्बा युद्ध भारतीय सेना से नहीं लड़ सकता। प्रायः पाकिस्तान को अमेरिकी सैन्य सहायता में हल्के शस्त्रों के प्रभाव को लगभग पूर्णतः नजर अंदाज कर दिया जाता है। जबकि हकीकत यह है कि भारतीय सुरक्षा के संबंध में अब तक पाकिस्तान को उपलब्ध कराये गये हल्के शस्त्र अधिक घातक सिद्ध हुए है।

संदर्भ –

1- कोलिन एस.ग्रे : हाड हैज बार चेन्द्र स्थित द एण्ड ऑफ कोल्डगर 2005।

2- सिपरी : 1995 पृष्ठ . 213.

3- आई.एस.एस. : इण्टर नेशनल इस्टीट्यूड ऑफ स्टेर्टानिक इण्स्ट्रीज : आम्सकार्ड 1998 पृष्ठ. 14.

4- ह्यूमन राइट वॉच पृष्ठ–15.

5-. एशियन सर्वे : 1983 पृ.–122–123.

6- सिपरी ईयर बुक : 1985 पृष्ठ –481.

7- आकताब आकताब : पूर्वील, पृष्ठ .81

8- ह्यूमन राइट वॉच पृष्ठ –17.

9- ह्यूमन राइट वॉच पृष्ठ –23.

10- ह्यूमन राइट वॉच पृष्ठ–55

11- वांशिगटन पोष्ट 1994 एण्डरसन

12- ह्यूमन राइटवॉच पृष्ठ –18.

13- जय स्रोत – साउथ एशियन सेरोरिज़्म पेटिल।

14- लघु शस्त्र सर्वेक्षण 2011, विषम विवरण अंक –7, 2011.

15- लघु शस्त्र सर्वेक्षण रिसर्च नोट नं.–1 जनवरी 2011.

Shot on OnePlus